MANAV CHETNA VIKAS KENDRA, INDORE

Campus : Vill. Pivday Kampel Road, Indore, 09425901691, 98272007676
City Office : 6 Anil Nagar Behind SOPA Office A.B. Road Indore 0731-2554171

दिनांक 2011

16 वॉ जीवन विद्या राष्ट्रीय सम्मेलन
एक स्पष्ट

15 वां राष्ट्रीय सम्मेलन बांदा (उ.प्र.) में आयोजित किया गया था। परम्परानुसार परिपाटी के अनुसार इसी सम्मेलन मे सर्वसम्मती से 16 वां सम्मेलन मानव चेतना विकास केन्द्र, इन्दौर में तय किया गया । इस निर्णय से हम उत्साहित हुए ।

सम्मेलन को अपेक्षित बनाने के अर्थ में 16 वें सम्मेलन को निम्नानुसार परिभाषित किया गया ।

सम्मेलन =

- पूर्णता के अर्थ में स्वस्फूर्त मिलन ।
- परस्परता में अपनी स्थिति व गति को प्रगट करने का उत्सव ।
- सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में अपनी भागीदारी तथा पूरकता की पहचान
- विभिन्न केन्द्रो द्वारा सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में कार्य, योजना तथा स्वंय का मूल्याकंन।

इस आशय की पूर्ति व व्यवस्था के क्रम में तीन–चार गोष्टी स्थानीय स्तर पर की गई। देशभर में विभिन्न केन्द्रों व व्यक्तियों के विचारों को सम्मेलन की गुणवत्ता वृद्धि तथा सम्मेलन से अपेक्षा के रुप में आमंत्रित किये गये थे। इस पर दिनांक 21–22 अगस्त 2011 को वृहद बैठक ली गई, जिससे कुछ मित्र व्यक्तिगत रुप से उपस्थित हुए तथा Tele Conferencing की व्यवस्था का प्रयोग किया जाकर देश में विभिन्न जगहों पर अवस्थित मित्रगणों से चर्चा की गई व निम्न निर्णय लिये गये।

1. कार्यक्रम का प्रारुप पिछले सम्मेलन अनुसार ही रखा जाना तय किया।

निरंतर–2–

देश की स्थिति व प्रचलन आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में सम्मेलन का मुख्य विषय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था रखा गया।

2. आवश्यकता के अन्य विषय समूह चर्चा के लिये निम्नांनुसार चिन्हीत किये गये।

- उत्तरप्रदेश व पंजाब तकनीकी विश्वविद्यालय अन्तर्गत चल रहे कार्यक्रम ।
- गोविन्दपुर बिजनौर उत्तरप्रदेश में ज्ञान केन्द्र की स्थापना ।
- अध्ययनशील व्यक्तियों में परस्पर पूरकता तथा संगीतमयता ।
- अभ्युदय संस्थान, रायपुर (छत्तीसगढ़) के एक वर्षीय अध्ययन शिविर ।
- आय.ए.एस.ई..सरदार शहर (राजस्थान) में चल रहे कार्यक्रम ।
- अभिभावक विधालय रायपुर की स्थापना व शिक्षण प्रकिया ।
- उत्पादित वस्तुओं के विनिमय तथा कीमत निर्धारण प्रकिया ।

तद्नुसार इन विषयों की सूचना तीन माह पूर्व सभी को दी गई एवं उनके लेख इस पर आमंत्रित किये गये। कुछ लेख उपलब्ध हो पाये।

कार्यक्रम के निर्धारण हेतु पूर्व के सम्मेलनों में किये गये अच्छे प्रयास एवं प्रकिया समझकर यथावत बनाये रखने का निर्णय हुआ । साथ ही प्राप्त प्रतिकियाओं की समीक्षा की जाकर प्रतिभागियों की भागीदारी, रुचि व उत्साह बनाये रखने के लिये निम्न बातों पर ध्यान दिया गया।

<u>दबाव रहित अभिव्यक्ति :–</u>

प्रतिभागी अपनी स्थिति और गति को परस्परता में यदि सहज रुप से रख पाते है तो प्रतिभागी की भागीदारी व रुचि बनी रहती है, इसलिये कार्यक्रम में मंच संचालन जैसा कोई व्यवस्था नही रखी गई । प्रायः यह देखा गया है कि मंच संचालक अपनी मानसिकता से पूरी सभा को प्रभावित करता है तथा प्रतिभागी की प्रस्तुती पर उसका दबाव व प्रभाव होती ही है। मंच संचालन न होने से स्वेच्छा, स्वंतत्रता से अभिव्यकतीयॉ प्रखर हुई। इसके साथ ही समय का सद्पयोग होने से अभिव्यक्तियों के लिये अधिक समय उपलब्ध हुआ। सम्मेलन मे आये हुए मान्य अतिथियों ने इस व्यवस्था को उचित ठहराया।

निरंतर–3–

मंच मुक्तता :—

सभा को भागों में बंटने से रोकने के लिये कार्यक्रम में मंच व्यवस्था नही की गई थी।

यद्यपि कुछ मित्रों के अनुसार यह व्यवस्था तो उत्तम मानी गई किन्तु कुछ प्रस्तुती अपेक्षा से कम आंकलित की गई। इस पर मंथन करने से स्पष्ट हुआ कि वह सब प्रस्तुतियां निंदा स्तुती से मुक्त होकर स्वमूल्याकंन अथवा स्वंय के प्रयासों मे कमी के अर्थ में ही समीक्षित होती है, जो कि स्वागत योग्य है। उल्लेखनीय यह भी है कि प्रत्येक प्रतिभागी की स्थिति भिन्नता के कारण उनकी प्राथमिकता में भिन्नता होना स्वाभाविक है। ऐसा अवसर मिलने से जहा प्रतिभागी अपनी प्राथमिकता को दबाव विहीन प्रस्तुत कर सके तो उनकी सामयिक अपेक्षा पूर्ण होती है। अतः यह व्यवस्था सम्मेलनों को गुणवत्ता सुधारने तथा सबकी अपेक्षापूर्ण करने के अर्थ में सहायक है तथा आगे भी हो सकेगी।

उत्पादित सामग्री का विनिमय :—

यह निर्णय लिया गया था कि सभी केन्द्रों द्वारा तैयार उत्पाद, उसकी गुणवत्ता तथा मूल्य निर्धारण की जानकारी सभी प्रतिभागी को उपलब्ध कराई जायेगी।

विभिन्न केन्द्रो द्वारा उत्पादित वस्तुओं का विनिमय प्रक्रिया का निर्धारण, प्रोत्साहन व उत्पादन में रुचि के अनुसार भागीदारी का निर्धारण हेतु इसे एक अवसर के रुप में चिन्हित किया गया था। इसके लिये सभी केन्द्रों से सामग्री की उपलब्धता हेतु निवदेन किया गया था किन्तु कुछ ही केन्द्रों से सामग्री उपलब्ध हो सकी। जिनका विनमय किया गया । आगे के सम्मेलनों में इस पर ध्यान देना उचित होगा।

मुख्य विषय पर श्रद्धेय बाबा जी के मार्ग दर्शन के अलावा करीब 15 प्रस्तुतियां हुई। विभिन्न केन्द्रों/व्यक्तियों द्वारा करीब 35 प्रस्तुतियां की गई है । सांयकालीन सत्रों में समूह चर्चा के विषयों पर वरिष्ठ मित्रगण द्वारा चर्चा को मार्गदर्शन पूर्वक सम्पन्न कराया गया। समूह चर्चाए सर्वाधिक रुप से उपयोगी व सार्थक स्वीकारी गई है। आगे के सम्मेलनों में इस तरह की चर्चाए हेतु अधिक समय व ध्यान दिया जाना उचित होगा।

निरंतर—4—

आदरणीय बाबा जी एवं समस्त मित्रगण व परिवारजन द्वारा कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भागीदारी सम्पन्न की गई। सम्मेलन में करीब 270 लोगों ने भागीदारी की एवं उत्साहवर्धन को अनुभव किया ।

यह भी सोचा गया था कि पूरे कार्यक्रम की एक स्मारिका शीघ्र तैयार कर वितरित की जायेगी परन्तु यह नही हो सका। यह रपट सम्मेलन की व्यवस्था के परिपेक्ष्य में है । इसमें प्रतिभागियों की प्रस्तुति, प्रेरणा तथा उसका मूल्यांकन शामिल नहीं है ।

आगामी सम्मेलन अभ्युदय संस्थान, अछोटी, रायपुर में सर्वानुमति से नियत किया गया ।

दिनांक
20.12.2011

आयोजक समिति
16 वां सम्मेलन
MCVK, Indore

समृद्धि श्रम से होती है । इस विधि से जीने में अमीरी गरीबी में संतुलन स्वभाविक है । जीव चेतना विधि से नर–नारी में असमानता, गरीबी अमीरी में असंतुलन बना रहता है । यही भय, प्रलोभन का आधार है । जीव चेतना विधि से जीने में प्रलोभन भाग सुविधा संग्रह ही है । हर अच्छा कहलाने वाला इंसान सर्वाधिक इसी क्रम में फंसा है । सबको सुविधा संग्रह चाहिये । जबकि समाधान समृद्धि पूर्वक हर परिवार आगे की स्थिति को सोच सकता है । आगे की स्थिति अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था ही है । अखण्ड परिवार समाधान, समृद्धि पूर्वक जी जाये । इन्हीं प्रमाणों के साथ मानव मानव में, वर्तमान में विश्वास करना बनता है । इसे भली प्रकार से जांचा है ।

अखण्ड समाज की स्थिति में नित्य उत्सव होना स्वभाविक है । उत्सव का मतलब है त्यौहार/ त्यौहार का आशय है खुशहाली, खुशहाली का आशय है सहीपन में विश्वास । इस क्रम में मानव अपने को सार्थक मानता है । इसको भी अच्छी प्रकार जॉचा है । आज भी अर्थात जीव चेतना में जीता हुआ मानव भी सहीपन का समर्थक है ।

लोक पाल मसौदा सबको अच्छा लग रहा है । अच्छा होने का तौर तरीका तय नहीं हो पाया । जबकि तीनों प्रकार के सभाओं में सर्वोपरि मेघावियों को इकट्‌ठा किये है । इस विडंबना को क्या कहा जाय । इससे यही कहा जा सकता है कि जीव चेतना से कहीं समाधान मिलने वाला नहीं है । कहीं का तात्पर्य राज्य, धर्म, शिक्षा, व्यापार, व्यवहार कार्य में समाधान निकलता संभव नहीं है । विकसित चेतन विधि से इन सबका समाधान हर व्यक्ति के पास होता है । इसी भली प्रकार से जॉचा है, सभी जॉच सकते हैं ।

इसी से सम्मेलन का पूर्णता पूर्ण होता है । अतः सम्मेलन में इन्हीं तत्वों को हृदयांगम कर पाते हैं ।

शर्व शुभ हो ।

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो ।

ए.नागराज (अग्रहार नागराज)

प्रषेता
मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्व वाद
भजनाश्रम, नर्मदॉचल, अमरकंटक
जिला अनूपपुर (म.प्र) भारत

दिनांक 2011

सम्मेलन

पूर्णतः के अर्थ में मिलन का नाम है सम्मेलन। अभी तक मानव पंरपरा होना शेष है। अभी तक मानव ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी के रुप में जिया है। ये सभी अपने–अपने ढंग से जीवों से अच्छा जीने के रुप में जिये है। अभी तक सर्वाधिक मानव जीवों के रुप में जिया है। जीवों से अच्छा जीने के लिये मानव का इच्छा, प्रयास, प्रकृति रही है। ऊपर के तीनों प्रकार के मानवों में यह प्रवृत्ति रही है। कहे गये तीनों प्रकार के मानव, जीवों से अच्छा जीने का प्रयत्न किये है। इसी कम में मानव, जीवों से अच्छा जीने का प्रयोग किया है। सारे मानव एक समूदाय दूसरे समूदाय को विरोधी माना है, इसी कम में शत्रु मित्र होना स्वीकारा है। सारे प्रार्थना उपकम शत्रुओं का नाश के लिये, मित्रों का रक्षा के लिये किया जाता है। इसी से मानव का मानसिकता का पता लगता है। यह भाव कोई समुदाय में कटुता के साथ कहा जाता है, कोई समुदाय में नम्रता के साथ कहा जाता है । कहा जाता है शत्रु या मित्र हो । इस प्रकार विरासत में मिला है, उसका वर्णन इनता ही है ।

आगे यह प्रस्ताव है '' चेतना विकास मूल्य शिक्षा का '' जिससे यह पता लगता है कि अभी तक मानव जीव चेतना में जिया है । यह कि अभी तक मानव जीव चेतना में लिया है । यह विकसित चेतना में जीने के लिए प्रस्ताव है । विकसित चेतना में जीने से मानव चेतना, देव मानव चेतना, दिव्य मानव चेतना विकसित होती है, जिसे भली प्रकार अनुभव कर देखा है । अभी की स्थिति में जीव चेतना में जीते हुये मानव भ्रम और अपराध से मुक्त नहीं हो

पाया है । विकसित चेतना विधि से जीने के क्रम में अपराध और भ्रम दूर हो जाता है । इसे भली प्रकार से परीक्षण कर देखा है । हर व्यक्ति परीक्षण कर सकते हैं, चाहे ज्ञानी हों, चाहे विज्ञानी हों, चाहे अज्ञानी हों, चाहे किसी समुदाय परम्परा में जीता हो । समझे बिना परीक्षण संभव नहीं है । जीने के क्रम में ही विकसित व्यक्ति का पहचान हो पाता है ।

मैं जो लिखा हूँ, आपके लिये सूचना ही है । मैं जो जीता हूं यह आपके लिये प्रमाण है जीकर देखने पर ही सूचनाओं का जॉचना हो पाता है । आज की स्थिति में मानव जात भाषा के ढ़ेर में फंस गया है । हर मानव समाधान पूर्वक जीना चाहता है । समझदारी के बिना समाधान संभव नहीं होता, जिसका प्रमाण हर नर–नारी में समान है । दूसरी विधि से हर मानव, परिवार में जीता है । हर परिवार में समाधान समृद्धि चाहिये । समाधान, समझदारी से,

निरन्तर –––2–––

समृद्धि श्रम से होती है । इस विधि से जीने में अमीरी गरीबी में संतुलन स्वभाविक है । जीव चेतना विधि से नर–नारी में असमानता, गरीबी अमीरी में असंतुलन बना रहता है । यही भय, प्रलोभन का आधार है । जीव चेतना विधि से जीने में प्रलोभन भाग सुविधा संग्रह ही है । हर अच्छा कहलाने वाला इंसान सर्वाधिक इसी क्रम में फंसा है । सबको सुविधा संग्रह चाहिये । जबकि समाधान समृद्धि पूर्वक हर परिवार आगे की स्थिति को सोच सकता है । आगे की स्थिति अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था ही है । अखण्ड परिवार समाधान, समृद्धि पूर्वक जी जाये । इन्हीं प्रमाणों के साथ मानव मानव में, वर्तमान में विश्वास करना बनता है । इसे भली प्रकार से जांचा है ।

अखण्ड समाज की स्थिति में नित्य उत्सव होना स्वभाविक है । उत्सव का मतलब है त्यौहार/ त्यौहार का आशय है खुशहाली, खुशहाली का आशय है सहीपन में विश्वास । इस क्रम में मानव अपने को सार्थक मानता है । इसको भी अच्छी प्रकार जॉचा है । आज भी अर्थात जीव चेतना में जीता हुआ मानव भी सहीपन का समर्थक है ।

लोक पाल मसौदा सबको अच्छा लग रहा है । अच्छा होने का तौर तरीका तय नहीं हो पाया । जबकि तीनों प्रकार के सभाओं में सर्वोपरि मेघावियों को इकट्ठा किये है । इस विडंबना को क्या कहा जाय । इससे यही कहा जा सकता है कि जीव चेतना से कहीं समाधान मिलने वाला नहीं है । कहीं का तात्पर्य राज्य, धर्म, शिक्षा, व्यापार, व्यवहार कार्य में समाधान निकलता संभव नहीं है । विकसित चेतन विधि से इन सबका समाधान हर व्यक्ति के पास होता है । इसी भली प्रकार से जॉचा है, सभी जॉच सकते हैं ।

इसी से सम्मेलन का पूर्णता पूर्ण होता है । अतः सम्मेलन में इन्हीं तत्वों को हृदयांगम कर पाते हैं ।

शर्व शुभ हो ।

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो ।

ए.नागराज (अग्रहार नागराज)

प्रणेता
मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्व वाद
भजनाश्रम, नर्मदाँचल, अमरकंटक
जिला अनूपपुर (म.प्र) भारत

MCVK Accounts Period 01.04.2009 – 31.04.2010

Opening Balance	**Rs. 47,416**	**Electricity**	**Rs. 24,180**
Donation Recd	**Rs. 75,000**	**Wages**	**Rs. 43,000**
Goods sold	**Rs. 1,00,233**	**Training Camp for Adult**	**Rs. 46,000**
Bank Int.	**Rs. 1,074**	**P.D.C for Kid**	**Rs. 20,000**
		Pries	**Rs. 6,300**
		Bank Charges	**Rs. 75**
		Closing Balance	**Rs. 84,168**
Total	**2,23,723/-**	**Total**	**2,23,723/-**

Campus : Vill. Pivday Kampel Road, Indore, 09425901691, 98272007676
City Office : 6 Anil Nagar Behind SOPA Office A.B. Road Indore 0731-2554171

Feed Back From

Training Period 24/12/2011 to 30/12/2011

Name of Participants : Designation :

Organization Name : Phone No.

Sr . No	Question	Answer
1	क्या इस प्रशिक्षण से आपके शिक्षण कार्य तथा बच्चों के परिणाम पर सकारात्मक प्रभाव पडेंगा ?	
2	क्या इस प्रशिक्षण से आपके शिक्षण कार्य में आपकी जिम्मेदारी भागीदारी बढ़ी है ?	
3	इस प्रशिक्षण में बतायी गयी शिक्षा की वस्तु को विस्तार से जानने के लिये अध्ययन शिविर, जो कि 3 माह से 6 माह का हो सकता है, मैं आप शामिल होने के लिये इच्छुक है ?	

APPENDIX-IV

UNDERTAKING

PROFORMA OF UNDERTAKING TO BE BROUGHT FOR RE-ALLOCATION FOR CHANGE OF COLLEGE/COURES

I VEDPRAKESH Son/daughter of Shri PURANIK RAM Rank No. 94 bearing Roll no. 900777 (main) in All India Pre-Medical/Pre-Dental Entrance Examination 2010, do solemnly declare that on being reallocated the collage or course on being eligible for change as per the conditions laid down and fulfillment of the criteria by me, I shall immediately vacant MBBS/BDS seat already allotted to me at MGMMC Indore college, and shall not have any claim over it. Any loss-academic, financial or any kind due to this change on my request will be at my own risks and costs.

Photograph of candidate attested by Dean/Principal

Signature of the candidate …………………………….
Name of the candidate …………………………………

Date :
Place :

Forwarded to A,D.G.(ME) for 2nd Counseling for re-allocation.

Signature of the Principal/Dean
(with seal)
Name of the Principal/Dean

This Undertaking From should singed by Dean/Principal must within the 7 days before the commencement of the 2nd Round of Counseling.